

අල්ලාහ්ගේ ගැනවන ඔහු ව විශ්වාස නොකළ විටෙක ඔවුන්ට ඔහු දඬුවම් කරනුයේ ඇයි?

හමේ ඒමාන ආව සාරේ කේ රබ කේ ප්‍රති සමර්පණ කේ බීච අන්තර කරනා හොගා ।

සාරේ සංසාරේ කේ රබ කා ආවශ්‍යක අධිකාර, ජිසේ ජොඩ්නා කිසි කේ ලිආ උචිත නේනි හේ, යහ හේ කි උසකේ ආක හොනේ කො ස්වීකාර කිආ ජාආ, උසී කී ඩබාදත කී ජාආ, උසකේ සාඡ කිසි කො සාඡී න ඊහරාආ ජාආ । වහී ආක සූෂ්ටිකර්තා හේ, උසී කී බාදශාහත හේ, උසී කා ආදේශ චලතා හේ, චාහේ හම මානේ ආ ඩකාර කර දේ । යහී ඒමාන කා මූල හේ (ඒමාන ස්වීකාර කරනේ ආව කාම කරනේ කා නාම හේ) । ඩසකේ අතිරික්ත හමාරේ පාස දූසරා විකල්ප නේනි හේ । ඩසී කී රොශනී මේ ඩසාන කා හිසාබ හොගා ආව උසේ සඡා දී ජාආගී ।

සමර්පණ කා උලඊ අපරාඡ හේ ।

"ක්‍යා හම ආඡාකාරිආ කො පාපිආ කේ සමාන කර දේගේ ?" [318] [සූරා අල-කල්ම : 35]

කිසි කො සාරේ සංසාරේ කේ රබ කේ බරාබර ආ සාඡී ඊහරානේ කො අඡ්‍යාචාර කහතේ හේ ।

"ඡානතේ හූආ ඡුම අල්ලාහ් තආලා කේ සාඡී න බනාආ ।" [319] [සූරා අල-බකරා : 22]

"ඡො ලොග ඒමාන රඡතේ හේ ආර අපනේ ඒමාන කො ෂිර්ක සේ නේනි මිලාතේ හේ, ආසේ හී ලොගේ කේ ලිආ ෂාන්ති හේ ආර වහී සීඡේ රාස්තේ පර චල රහේ හේ ।" [320] [සූරා අල-අනආම : 82]

ඒමාන ආක අනදේඡා මුද්දා හේ, ජිසකේ ලිආ අල්ලාහ්, උසකේ ෆරිෂ්තේ, උසකී පුස්තකේ, උසකේ රසූලේ ආර අන්තිම දින පර විෂ්වාස රඡනා ආවශ්‍යක හේ । සාඡ හී අල්ලාහ් කේ නිර්ණආ කො ස්වීකාර කරනා ආර උසසේ සන්ඡුෂ්ට හොනා ඡරූරී හේ ।

"(කුඡ්) බදුආේ නේ කහා : හම ඒමාන ලේ ආආ । ආප කහ් දේ : ඡුම ඒමාන නේනි ලාආ । පරන්ඡු යහ කහේ කි හම ඩස්ලාම ලාආ (ආඡාකාරී හො ගආ) । ආර අබී තක ඒමාන ඡුම්හාරේ දිලේ මේ ප්‍රවේෂ නේනි කිආ । ආර යදි ඡුම අල්ලාහ් ආර උසකේ රසූල කී ආඡා කා පාලන කරොගේ, ඡො වහ් ඡුම්හේ ඡුම්හාරේ කර්මේ මේ සේ කුඡ් බී කමී නේනි කරොගා । නි:සදේහ අල්ලාහ් අති ක්ෂමාෂීල, අඡ්‍යන්ත ද්‍යාආආන් හේ ।" [321] [සූරා අල-හුඡුරාත : 14]

උපර්‍යුක්ත ආආත හමේ බතාඡී හේ කි ඒමාන ආක උඡ්ච ආර මහාන දර්ඡා හේ । ඒමාන නාම හේ රාඡී හොනේ, ස්වීකාර කරනේ ආර ඡුෂ් හොනේ කා । ඒමාන කී කඡ් ෂ්‍රේභිආආ ආව දර්ඡේ හේ ආර ඒමාන ගඡතා-බද්තා රහ්තා හේ । ජූබ කේ මාමලේ කො සමඡ්නේ කී ක්ෂමතා ආර දිල කා උන්හේ ස්වීකාර කරනා ආක ව්‍යක්ති කා දූසරේ ව්‍යක්ති සේ බින්න හොතා හේ । උසී ප්‍රකාර ඩසාන අපනේ රබ කේ ඡමාල ව ඡලාල කේ ගුභේ කො සමඡ්නේ ආව රබ කො ඡානනේ මේ අලග-අලග හොතේ හේ ।

ग़ैब के मामलों को कम समझने या सोच के संकीर्ण होने पर इंसान की पकड़ नहीं होगी, परन्तु सदैव जहन्नम में रहने से बचने के लिए कम से कम जो चीज़ उसके लिए आवश्यक है उसपर उसकी पकड़ होगी। यह आवश्यक है कि अल्लाह को एक माना जाए और यह माना जाए कि सारी सृष्टि उसी की है, सारे संसार में उसी का आदेश चलता है एवं उसी की इबादत होनी चाहिए। इसे स्वीकार कर लेने के बाद अल्लाह जिसके चाहे अन्य गुनाहों को माफ़ कर दे। इसके अलावा इंसान के पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है। या तो ईमान और सफलता या फिर कुफ़्र और बर्बादी। या तो कुछ है या फिर कुछ नहीं है।

"निःसंदेह अल्लाह यह क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझी बनाया जाए और उसके सिवा जिसे चाहे, क्षमा कर देगा। जो अल्लाह का साझी बनाता है, तो उसने महा पाप गढ़ लिया।" [322]

ईमान ग़ैब से जुड़ा हुआ विषय है और ग़ैब के ज़ाहिर होने या क़यामत की निशानियाँ दिख जाने के बाद ईमान लाने का कोई फ़ायदा नहीं रह जाएगा। [सूरा अल-निसा : 48]

"जिस दिन तुम्हारे पालनहार की तरफ से कोई निशानी आ जाएगी, तो उस दिन उसका ईमान लाना उसको कोई काम न देगा, जो पहले से ईमान न लाया हो, या ईमान की स्थिति में कोई सत्कर्म न किया हो।" [323] [सूरा अल-अन्-आम : 158]

यदि कोई व्यक्ति ईमान रखते हुए नेक कामों से लाभान्वित होना चाहता है और अपनी नेकियों को बढ़ाना चाहता है, तो यह क़यामत आने और परोक्ष के प्रकट होने से पहले होना चाहिए।

जहाँ तक उस व्यक्ति की बात है, जिसके खाते में नेक काम नहीं हैं, अगर वह हमेशा के जहन्नम से बचना चाहता है, तो उसके लिए अनिवार्य है कि वह दुनिया से इस अवस्था में निकले कि अल्लाह के सामने समर्पित हो, अल्लाह के एक होने पर विश्वास रखता हो और उसकी इबादत करता हो। कुछ पापियों को अस्थायी रूप से जहन्नम में जाना पड़ सकता है, परन्तु यह अल्लाह की चाहत के तहत है। यदि वह चाहेगा तो क्षमा कर देगा और यदि चाहेगा तो जहन्नम में डाल देगा।

"हे ईमान वालो! अल्लाह से ऐसे डरो, जैसे वास्तव में उससे डरना होता है, तथा तुम्हारी मौत इस्लाम पर रहते हुए ही आनी चाहिए।" [324] [सूरा आल-ए-इमरान : 102]

इस्लाम में ईमान का मतलब ज़बान से इक़रार करना और उसके तक्राज़े पर अमल करना है। ईमान का मतलब केवल विश्वास नहीं है, जैसा कि आज ईसाई धर्म की शिक्षाओं में है और न केवल अमल है, जैसा कि नास्तिकता में है। वह व्यक्ति जो ग़ैब पर ईमान एवं धैर्य के स्टेज में है, उसका ईमान उस व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकता है, जिसने आख़िरत में ग़ैब को देख लिया हो और उसके आगे परोक्ष प्रकट हो चुका हो। इसी तरह वह व्यक्ति जिसने मुसीबत, सख्ती, कमज़ोरी एवं इस्लाम के अंजाम से अज्ञानता की अवस्था में अल्लाह के लिए काम किया है, उस व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकता है जिसने अल्लाह के लिए उस समय काम किया हो, जब इस्लाम विजयी और शक्तिशाली हो चुका हो।

“तुम में से जिन लोगों ने विजय से पूर्व अल्लाह के मार्ग में खर्च किया तथा धर्मयुद्ध किया, वह (दूसरों के) समतुल्य नहीं, अपितु उनसे अत्यंत उच्च पद के हैं, जिन्होंने विजय के पश्चात दान किया तथा धर्मयुद्ध किया। हाँ, भलाई का वचन तो अल्लाह तआला का उन सब से है, और अल्लाह उन सब की अच्छी तरह खबर रखता है जो तुम करते हो।” [325] [सूरा अल-हदीद : 10]

अल्लाह बिना कारण किसी को दंडित नहीं करता। इंसान का हिसाब लिया जाएगा और उसे या तो बन्दों के अधिकार बर्बाद करने के कारण या फिर सारे संसारों के रब के अधिकार को नष्ट करने के कारण दंडित किया जाएगा।

वह अधिकार जिसे, सदैव के जहन्नम से नजात पाने के लिए, किसी को छोड़ने की अनुमति नहीं है, वह अधिकार है सारे संसारों के रब के एक होने, उसी की इबादत एवं उसका कोई साझी न होने को स्वीकार करना, इन शब्दों के द्वारा कि "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है और उसका कोई साझी नहीं है, मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके बंदे एवं उसके रसूल हैं, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सभी रसूल सत्य हैं और मैं गवाही देता हूँ कि जन्नत सत्य है और जहन्नम सत्य है" फिर इन शब्दों के अधिकार को पूरा करना।

इस्लाम को स्वीकार करने से किसी को न रोकना या किसी ऐसे काम का समर्थन न करना जिसका उद्देश्य इस्लामी आह्वान एवं अल्लाह के धर्म को फैलने से रोकना हो।

लोगों के अधिकारों का अतिक्रमण न करना, उनको नष्ट न करना या उनपर अत्याचार न करना।

सृष्टि या सृष्टियों से बुराई को रोकना। इसके लिए लोगों से अपने आपको दूर करना पड़े तो भी कर लेना।

कभी-कभी इंसान के पास बहुत सारे नेक काम नहीं होते हैं, परन्तु वह किसी को हानि नहीं पहुँचाता है या कोई ऐसा काम नहीं करता है जो उसके अपने आपके लिए या लोगों के लिए बुरा हो, अल्लाह के एक होने की गवाही देता है, तो उसके जहन्नम से नजात पाने की उम्मीद है।

"अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें यातना दे, यदि तुम कृतज्ञ रहो तथा ईमान रखो और अल्लाह बड़ा गुणग्राही अति ज्ञानी है।" [326] [सूरा अल-निसा : 147]

मनुष्यों को रैंक और दर्जा के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा। इस दुनिया दुनिया में उनके कर्मों से शुरू होकर, क़यामत होने तक, अनदेखी दुनिया के प्रकट होने एवं आखिरत में हिसाब शुरू होने तक। क्योंकि कुछ समुदायों को अल्लाह आखिरत में आजमाएगा, जैसा कि हदीस शरीफ में आया है।

संसारों का रब प्रत्येक व्यक्ति को उसके बुरे कर्मों के अनुसार दंड देता है। दंड या तो दुनिया में ही देता है या आखिरत तक उसको टाल देता है। यह काम की गंभीरता, तौबा करने या न करने और अन्य सृष्टियों पर पड़ने वाले उसके प्रभाव अथवा उससे होने वाले नुकसान पर निर्भर करता है। दरअसल अल्लाह बिगाड़ को पसंद नहीं करता।

पिछले समुदायों, जैसे कि नूह, हूद, सालेह और लूत -अलैहिमुस्सलाम- के समुदाय और फिरऔन आदि, जिन्होंने रसूलों को झुठलाया, अल्लाह ने उनके निंदनीय कर्मों तथा उनके द्वारा किए गए अत्याचार के कारण इस दुनिया में ही उनको दंडित कर दिया, क्योंकि उन्होंने न अपने आपको रोका, न अपनी बुराई से रुके, बल्कि उसमें आगे बढ़ते ही चले गए। हूद -अलैहिस्सलाम- के समुदाय ने धरती पर अहंकार किया, सालेह -अलैहिस्सलाम- के समुदाय ने ऊँटनी की हत्या की, लूत - अलैहिस्सलाम- का समुदाय निर्लज्जता पर डट गया, शोएब -अलैहिस्सलाम- का समुदाय बिगाड़, नाप-तौल में कमी करके लोगों के अधिकार मारने पर डट गया, फिरौन की जाति ने मूसा - अलैहिस्सलाम- की जाति पर अत्याचार किया और उनसे पहले नूह -अलैहिस्सलाम- का समुदाय रब की इबादत के साथ शिर्क करने पर अड़ा रहा।

"जो व्यक्ति अच्छा कर्म करेगा, तो वह अपने ही लाभ के लिए करेगा और जो बुरा कार्य करेगा, तो उसका दुष्परिणाम उसी पर होगा और आपका पालनहार बंदों पर तनिक भी अत्याचार करने वाला नहीं है।" [327] [सूरा फुस्सिलत : 46]

"तो हमने हर एक को उसके पाप के कारण पकड़ लिया। फिर उनमें से कुछ पर हमने पथराव करने वाली हवा भेजी, और उनमें से कुछ को चीख[ने पकड़ लिया, और उनमें से कुछ को हमने धरती में धँसा दिया और उनमें से कुछ को हमने डुबो दिया। तथा अल्लाह ऐसा नहीं था कि उनपर अत्याचार करे, परंतु वे स्वयं अपने आपपर अत्याचार करते थे।" [328] [सूरा अल-अनकबूत : 40]

ଓଡ଼ିଆ ଚିତ୍ରଣ ଶୃଙ୍ଖଳା

୧୧୧୧୧୧: ୧୧୧୧୧: // ୧୧୧.୧୧୧୧୧୧୧.୧୧୧ / ୧୧୧୧ / ୧୧ / ୧୧ / ୧୧୧୧ / 125 /

୧୧୧୧୧୧ ୧୧୧୧୧୧: ୧୧୧୧୧: // ୧୧୧.୧୧୧୧୧୧୧.୧୧୧ / ୧୧୧୧ / ୧୧ / ୧୧ / ୧୧୧୧ / 125 /

୧୧୧୧୧୧୧୧ 13୧୧ ୧୧ ୧୧୧୧ 2026 02:01:31 ୧୧